

देहात्मवाद क्या है?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

देह का अर्थ है शरीर और आत्मा का अर्थ है चेतनतत्व। बोलने वाला देह है और बुलाने वाला आत्मा है। आत्मा अक्षय सुख का धाम है। शरीर में सुख और दुःख दोनों हैं। धूप और छाया की भांति यह आता-जाता रहता है। दोनों का गुण अलग-अलग है किन्तु साथ-साथ रहते हैं। मन, वचन और काया इनके साथ है। देह कभी आत्मा नहीं हो सकता और आत्मा कभी भी देह नहीं हो सकता। यह ज्ञान भेदविज्ञान का ज्ञान है। कुदरत के कानून को जानने के लिए देहात्मवाद को जानना आवश्यक है। देह या शरीर जड़ है। यह भौतिक पदार्थों से बना हुआ है। यह पंचभूतात्मक है। जड़ होते हुए भी यह अनुभूति करता है। ऐसा इसलिए होता है कि यह चेतन के साथ रहता है। चेतना में सुख-दुःख की अनुभूति होती है।

चार्वाक दर्शन देह को ही आत्मा मानता है। प्रत्यक्ष से परे आत्मा की सत्ता नहीं है। इसलिए चार्वाक दर्शन मोक्ष, धर्म जैसी पारलौकिक सत्ताओं में विश्वास नहीं करता। शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। जड़ ओर चेतन दोनों विजातीय द्रव्य हैं। आत्मा चेतन और अरूप है। शरीर अचेतन और सरूप। दोनों का संबंध कैसे हो सकता है? संसारी आत्मा सूक्ष्म और स्थूल इन दो प्रकार के शरीरों से आवेष्टित रहता है। एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने के समय स्थूल शरीर छूट जाता है, सूक्ष्म शरीर नहीं छूटता। सूक्ष्म शरीरधारी जीवों को एक के बाद दूसरे-तीसरे स्थूल शरीर का निर्माण करना पड़ता है। सूक्ष्म शरीर धारी जीव ही दूसरा शरीर धारण करते हैं। इसलिए अमूर्त जीव मूर्त शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं? यह प्रश्न ही नहीं उठता।

संसारी दशा में जीव कथंचित् मूर्त भी है। उसका अमूर्त रूप विदेह दशा में प्रगट होता है। संसारी दशा में जीव और पुद्गल का कथंचित् सादृश्य होता है। शरीर और चेतना दोनों भिन्न धर्मक है। फिर भी इनका अनादि संबंध है। चेतन और अचेतन चैतन्य की दृष्टि से भिन्न हैं।

इसलिए वे एक नहीं हो सकते, किन्तु सामान्य गुण की दृष्टि से वह अभिन्न भी हैं। इसलिए उनमें संबंध हो सकता है।

चेतन शरीर का निर्माता है। शरीर उसका अधिष्ठान है। इसलिए दोनों पर एक दूसरे की क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। शरीर की रचना चेतन विकास के आधार पर होती है। चेतना विकास के अनुरूप शरीर की रचना होती है। शरीर रचना के अनुरूप चेतना की प्रवृत्ति होती है। शरीर निर्माण काल में आत्मा उसका निमित्त बनती है। आत्मा शरीर से सर्वथा भिन्न नहीं होती, इसलिए आत्मा की परिणति का शरीर पर और शरीर की परिणति का आत्मा पर प्रभाव पड़ता है। देहमुक्त होने के बाद आत्मा पर शरीर का कोई प्रभाव नहीं होता। किन्तु दैहिक स्थितियों में जकड़ी हुई आत्मा के क्रियाकलाप में शरीर सहायक और बाधक बनता है।

जड़ पदार्थ में हलन-चलन नहीं होता। जैसे पत्थर लकड़ी या अन्य निर्जीव पदार्थ एक जगह रखे जाते हैं तो उसमें गति नहीं होती है। जड़ पदार्थ चेतन भाव से रहित होता है, इसलिए उसे जड़ कहा जाता है। वस्तु के हलन-चलन को गतिशीलता कहा जाता है। धर्म आत्मा का लक्षण है, गुण है। जो धारण करता है या धारण करने की शक्ति जिसमें होती है वह धर्म है। गुणों का आचरण में आना आवश्यक है। धर्म बहुत ही व्यापक शब्द है। इसके अंतर्गत भावों की शुद्धता, मन की निर्मलता और सात्विक विचार का अधिक महत्व है। धर्म मूलतः किसी वस्तु का सहज गुण है। इसी प्रकार जितने भी पदार्थ हैं, उन सबका स्वाभाविक धर्म होता है। जब पदार्थों में विकृति उत्पन्न की जाती है तो उनके गुण धर्म भी बदल जाते हैं। आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आती है। यह अपने स्वरूप में चैतन्य युक्त है। शेष जितने भी पदार्थ हैं, वे भौतिक तत्व हैं। उन पदार्थों में परिवर्तन, परिवर्धन होता रहता है। आत्मा और जड़ का जब संयोग होता है तो जड़ पदार्थ भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। शरीर से जब आत्मा का संयोग होता है तो जड़ शरीर भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर से अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। मूलतः आत्मा के शुद्धि और अशुद्धि का कोई प्रश्न नहीं है। शरीर में शुद्धता और अशुद्धता देखी जाती है। यदि मानव अच्छा कर्म करता है तो पुण्यलोक की प्राप्ति होती है और यदि

बुरा कार्य करता है तो उसे नरक की प्राप्ति होती है। इसी को ध्यान में रखकर यह बात कही गयी है कि धर्म आत्मा को शुद्ध करता है।

आत्मा को न तो आंखों से देखा जा सकता है, न वाणी से कहा जा सकता है, न तो अन्य इन्द्रियों से उसे जाना जा सकता है, न तपस्या और कर्म से ही उसे जाना जा सकता है। जिसके द्वारा सारी ज्ञानेन्द्रियां अपने-अपने विषय का ज्ञान कराती हैं उसे किस साधन से जाना जाय। इसलिये कहा गया है कि **‘ज्ञानप्रसादेन तं पश्यते’** अर्थात् ज्ञान के द्वारा ही उसे जाना जा सकता है। जब मनुष्य को सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का ज्ञान हो जाता है तो उसका ज्ञान पुष्ट हो जाता है। पुरुष या आत्मा को चेतन तत्त्व तथा प्रकृति को अचेतन या जड़तत्त्व कहा गया है। शरीर जड़ और विस्तार वाला है।